गांठदार त्वचा रोगः एक उभरता हुआ खतरा

डॉ. भूमिका, डॉ. सोनम भट्ट[1], डॉ. विवेक कुमार सिंह[2], डॉ. अंजय एवं डॉ. पी. कौशिक

सहायक प्रध्यापक, पशुलोक स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान विभाग,
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

1. सहायक प्रध्यापक, पशु औषधि विज्ञान विभाग,
2. सहायक प्रध्यापक, पशु नैदानिक परिसर विभाग,

गांठ दार त्वचा (लंपी स्किन) रोग एक विषाणु जनित रोग है, जो मवेशियों को प्रभावित करता है। यह रक्त पोषक कीड़ो जैसे मक्खियों और मच्छरों की कुछ प्रजातियों द्वारा होता है। यह बुखार का कारण बनता है। त्वचा पर गांठ और मृत्यु भी हो सकती है, खासकर उन जानवरों में जो पहले विषाणु के संपर्क में नहीं आये है । वर्तमान समय में भारत के गुजरात एवं राजस्थान राज्यों में लगभग दस हजार गायों की मृत्यु हो चुकी है, तथा लगभग दो लाख गायों के संक्रमित होने का अनुमान है। गुजरात एवं राजस्थान के आलावा यह बीमारी मध्यप्रदेश , पंजाब, हिमाचलप्रदेश में भी रिपोर्ट की गयी है तथा जल्द ही इसके दूसरे राज्यों में भी फैलने के आसारहै। बताया जा रहा है, कि यह बीमारी हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के रास्ते अप्रैल महीने में देश में आई थी। हालांकि यह बीमारी अफ्रीकन मूल की बताई जा रही है ।वहां इसका पहला मामला सन् 1929 में सामने आया था।

बीमारी का कारण क्या हैं ?

गांठदार त्वचा बीमारी एक विषाणु से फैलने वाला रोग है । यह बीमारी कैप्री पांक्स नामक विषाणु के कारण होती है । इस विषाणु की समानता बकरियों एवं भेड़ों में चेचक करने वाले विषाणु से बताई जा रही है।

कौन से जानवर गांठदार त्वचा रोग से प्रभावित होते है ?

यह रोग मुख्यतः गायों एवं भैसों में पाया जाता है । दूसरे पशुधन इस रोग से प्रभावित नहीं होते हैं । गायों में भैसों के मुकाबले मृत्यु दर ज्यादा है।

क्या यह रोग मनुष्यों में भी फैल सकता हैं ?

मनुष्यों में यह बीमारी फैलने का खतरा न के बराबर हैं, हालांकि पशुओं को छूने के बाद सभी लोगो को अच्छी तरह से हाथ धोना चाहिऐं।

क्या गांठ दार त्वचा रोग मौसमी हैं ?

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बीमारी का प्रकोप मौसमी होता है। यह मुख्यतः बरसात के दिनों में फैलता है । परंतु बीमारी का प्रकोप साल के किसी भी समय में हो सकता है । क्योकि मच्छर, मक्खी और खून चूसने वाले कीट हर जगह मौजूद होते हैं ।

बीमारी के लक्षण क्या होते हैं ?

गांठदार त्वचा बीमारी का सबसे ज्यादा असर दुधारू पशुओं में देखने को मिलता है । यह बीमारी होने पर पशुओं के शरीर में गांठ होने लगती है । उन्हें तेज बुखार आता है, साथ ही सिर और गर्दन में तेज दर्द होता है । बीमार पशुओं के दूध देने की क्षमता भी घट जाती है । पशुओं के मुंह में गांठ बन जाने से वह खाना नहीं खा पाते अतः उनका वजन कम होने लगता है । ज्यादा मात्रा में लार का निकलना एवं नाक बहना इसके दूसरे लक्षण होते है । गाभिन पशुओं में गर्भपात की समस्या देखी गयी है । कुछ पशुओं की मृत्यु भी हो जाती हैं ।

पशुओं में बीमारी का इलाज क्या हैं ?

इस बीमारी की कोई इलाज नहीं है । सामान्यतः हम प्रतिजैविकों का,सूजन कम करने वाली दवाईया, विटामिन की दवाईया दे सकते है । इन सब दवाइयों का उपयोग करके हम दुसरे जीवाणु के संक्रमण, बुखार और सूजन को कम करने के लिए कर सकते है और साथ ही पशुओं की भूख को बढ़ा सकते हैं।

पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए क्या करें ?

विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इस बीमारी का शीघ्र निदान करना एवं उसके बाद बड़े स्तर पर टीकाकरण का क्रार्यक्रम किया जाना चाहिये । पशुचिकित्सों के अनुसार यह बीमारी मच्छरों एवं मक्खियों जैसे खून चूसने वाले कीड़ों से फैलता है । दूषित चारे एवं पानी के कारण पशुओं को अपने चपेट में ले लेता है । अगर किसी पशु में इस बीमारी के लक्षण दिखते है तो अन्य पशुओ से अलग कर दें । किसी अन्य पशुओं का जूठा पानी या चारा न खिलाये साथ ही पशुओं को रखने वाले स्थान पर साफ-सफाई का ध्यान रखें । पशुगृह में कीटनाशक एवं निस्संक्रामक रसायन का उपयोग करे जिससे रोग फैलाने वाले वाहको को कम किया जा सके । स्वस्थ पशुओं में टीकाकरण करना चाहिऐ, जिससे उनमें प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो । इन सब के अलावा मरे हुये पशुओं का सही तरह से निस्तारण करना चाहिये, तथा उसके आसपास की जगह को स्वच्छ करना चाहिऐं।